

वेदों में प्रयुक्त छन्द

पं. युधिष्ठिर मीमांसक

कृत

वैदिक छन्दोमीमांसा एवम् वैदिक स्वर मीमांसा

से

संकलनकर्त्ता- सञ्जय मोहन मित्तल

भूमिका

वैदिक मन्त्रों के गायन के लिए छन्दों की जानकारी अत्यन्त आवश्यक है। छन्दों में अक्षर गिनने के लिए केवल स्वरों को ही गिना जाता है व्यञ्जनों को नहीं। बिना हलन्त के व्यञ्जन में निहित स्वर को गिना जाएगा। उदाहरण के लिए -

अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् । होतारं रत्नधातमम् ॥ ऋग् १:१:१

अ, ग्नि, मी, ळे, पु, रो, हि, तम् । १ - ८

य, ज्ञ, स्य, दे, वम्, ऋ, त्वि, जम् । ९-१६

हो, ता, रम्, र, त्न्, धा, त, मम् । १७-२४

२४ अक्षरों व तीन पादों का यह गायत्री छन्द है।

छन्दों के प्रकार व गणना विधि

छन्द शास्त्र बहुत विस्तृत और पेचीदा है। विभिन्न गन्थों के अनुसार स्वर गणना के आधार पर छन्द निर्णय करने की आठ विधियाँ हैं, दैव, आसुर, प्राजापत्य, आर्ष, याजुष, साम्न, आर्च व ब्रह्म। इनमें से आर्ष विधि का सामान्यतः वेदों में प्रयोग किया जाता है। अगले पृष्ठ पर दी गई तालिका में आर्ष गणना पद्धति को लाल रङ्ग से उभार दिया गया है। इस गणना से छब्बीस छन्द सामने आते हैं। इन छन्दों को चार भागों में बाँटा गया है।

१. **प्रागायत्री** - इसमें पाँच छन्द हैं, जिनमें अक्षरों की संख्या ४ से २० तक है। मा/उक्ता, प्रमा/अत्युक्ता, प्रतिमा/मध्या, उपमा/प्रतिष्ठा व समा/सुप्रतिष्ठा।
२. **प्रथम सप्तक** - इसमें सात छन्द हैं, जिनमें अक्षरों की संख्या २४ से ४८ तक है। गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप्, बृहती, पङ्क्ति, त्रिष्टुप् व जगती।
३. **द्वितीय सप्तक** - इसमें सात छन्द हैं, जिनमें अक्षरों की संख्या ५२ से ७६ तक है। अतिजगती, शक्वरी, अतिशक्वरी, अष्टि, अत्यष्टि, धृति व अतिधृति।

४. तृतीय सप्तक - इसमें सात छन्द हैं, जिनमें अक्षरों की संख्या ८० से १०४ तक है। कृति, प्रकृति, आकृति, विकृति, संकृति, अभिकृति व उत्कृति।

छन्द व संगीत

प्रत्येक छन्द के गायन के लिए एक मूल संगीत स्वर का विधान है। तालिका के अन्त में इस मूल संगीत स्वर को भी अङ्कित कर दिया गया है। प्रत्येक वैदिक ऋचा को तीन स्वरों में गाना चाहिए, छन्द का मूल उदात्त स्वर, एक स्वर ऊपर स्वरित स्वर व एक स्वर नीचे अनुदात्त स्वर। संहिता पाठ में मन्त्रों पर लगे उदात्त, अनुदात्त चिन्हों के अनुसार गायन के स्वर का निर्णय करना चाहिए। उदाहरण के लिए गायत्री छन्द का मूल उदात्त स्वर षड्ज है; इस छन्द में निबद्ध मन्त्रों के लिए स्वरित स्वर ऋषभ होगा व अनुदात्त स्वर निषाद।

छन्द गणना की आठों विधियों का संक्षेप में विवरण

गणना पद्धति	१	२	३	४	५	६	७	८	
	दैव	आसुर	प्राजापत्य	आर्ष	याजुष	साम्न	आर्च	ब्रह्म	स्वर*
छन्द	आरम्भ = १ अन्तराल = + १	आरम्भ = १५ अन्तराल = - १	आरम्भ = ८ अन्तराल = + ४	दैव+ आसुर+ प्राजापत्य	आरम्भ = ६ अन्तराल = + १	आरम्भ = १२ अन्तराल = + २	आरम्भ = १८ अन्तराल = + ३	याजुष+ साम्न+ आर्च	छन्द का मूल स्वर
मा / उक्ता				४					
प्रमा / अत्युक्ता				८					
प्रतिमा / मध्या				१२					
उपमा / प्रतिष्ठा				१६					
समा / सुप्रतिष्ठा				२०					
गायत्री	१	१५	८	२४	६	१२	१८	३६	षड्ज
उष्णिक्	२	१४	१२	२८	७	१४	२१	४२	ऋषभ
अनुष्टुप्	३	१३	१६	३२	८	१६	२४	४८	गान्धार
बृहती	४	१२	२०	३६	९	१८	२७	५४	मध्यम

गणना पद्धति	१	२	३	४	५	६	७	८	
	दैव	आसुर	प्राजापत्य	आर्ष	याजुष	साम्न	आर्च	ब्रह्म	स्वर*
छन्द	आरम्भ = १ अन्तराल = + १	आरम्भ = १५ अन्तराल = - १	आरम्भ = ८ अन्तराल = + ४	दैव+ आसुर+ प्राजापत्य	आरम्भ = ६ अन्तराल = + १	आरम्भ = १२ अन्तराल = + २	आरम्भ = १८ अन्तराल = + ३	याजुष+ साम्न+ आर्च	छन्द का मूल स्वर
पङ्क्ति	५	११	२४	४०	१०	२०	३०	६०	पञ्चम
त्रिष्टुप्	६	१०	२८	४४	११	२२	३३	६६	धैवत
जगती	७	९	३२	४८	१२	२४	३६	७२	निषाद
अतिजगती	८	८	३६	५२					निषाद
शक्वरी	९	७	४०	५६					धैवत
अतिशक्वरी	१०	६	४४	६०					पञ्चम
अष्टि	११	५	४८	६४					मध्यम
अत्यष्टि	१२	४	५२	६८					गान्धार
धृति	१३	३	५६	७२					ऋषभ
अतिधृति	१४	२	६०	७६					षड्ज
कृति				८०					षड्ज
प्रकृति				८४					ऋषभ
आकृति				८८					गान्धार
विकृति				९२					मध्यम
संकृति				९६					पञ्चम
अभिकृति				१००					धैवत
उत्कृति				१०४					निषाद

* प्रथम, द्वितीय एवम् तृतीय सप्तक के छन्दों के लिए मूल संगीत स्वर का चयन क्रमशः आरोह, अवरोह व पुनः आरोह में करने का नियम है। महर्षि दयानन्द के वेद भाष्यों में तृतीय सप्तक के छन्दों के लिए मूल संगीत स्वर का चयन अवरोह (निषाद से षड्ज) में किया गया है। प० मीमांसक ने इसे महर्षि की सहायता में नियुक्त लिपिकारों की भूल बतलाया है। इन लिपिकारों में से किसी एक ने छन्दों के स्वरों से मिलान की एक सूची बनाई होगी जिसमें उसने प्रमाद में यह भूल की और बाकी सब ने इसी सूची के आधार पर स्वरांकन में त्रुटि की होगी। इसके उपरान्त आर्य समाज के अन्य विद्वानों ने भी इस भूल का सुधार नहीं किया।

गणना में भेद

व्यूहन - किसी पाद में अक्षर संख्या कम होने पर सन्धियों को तोड़कर दो स्वतन्त्र स्वरों की कल्पना कर संख्या पूर्ण कर सकते हैं, जैसे ए को अ + इ में। इसके अतिरिक्त सन्धि में लुप्त हुए स्वरों जिनका चिन्ह ऽ है, गिन सकते हैं।

एक या दो अक्षरों के कम अथवा ज्यादा होने से छन्द भंग नहीं होता। इससे हर छन्द के पाँच प्रकार हो जाते हैं। इन भेदों को निम्न विशेषणों से जाना जाता है।

१. **कोई विशेषण नहीं** - अक्षर कम या ज्यादा नहीं हैं।
२. **निचृत्** - एक अक्षर कम है, जैसे २३ अक्षरों वाला निचृद्गायत्री
३. **विराट्** - दो अक्षर कम है, जैसे २२ अक्षरों वाला विराट्गायत्री
४. **भुरिक्** - एक अक्षर अधिक है जैसे २५ अक्षरों वाला भुरिक्गायत्री
५. **स्वराट्** - दो अक्षर अधिक है जैसे २६ अक्षरों वाला स्वराट्गायत्री

इसके अतिरिक्त छन्दों में पादों में अक्षरों की संख्या भिन्न होने से भी छन्दों के उप भेद होते हैं। इन उप भेदों को निम्न विशेषणों से जाना जाता है।

१. **सङ्कमती** - किसी छन्द में कोई सा भी पाद पाँच अक्षरों का हो
२. **ककुम्मती** - किसी छन्द में कोई सा भी पाद छः अक्षरों का हो
३. **पिपीलिकमध्या** - तीन पाद वाले छन्द में मध्य पाद अन्य पादों को अपेक्षा छोटा हो
४. **यवमध्या** - तीन पाद वाले छन्द में मध्य पाद अन्य पादों को अपेक्षा बड़ा हो

छन्दों के भेद-प्रभेद

छन्दों के भेद प्रभेद पादों और स्वरों की भिन्नता के कारण होते हैं और उन्हें एक विशेषण लगा कर दर्शाया जाता है।

गायत्री छन्द के भेद-प्रभेद

गायत्री छन्द के प्रायः तीन पाद व २४ अक्षर होते हैं। कभी-कभी एक, दो, चार और पाँच पाद भी देखे जाते हैं। अतः पादसंख्या के अनुसार गायत्री एकपदा, द्विपदा, त्रिपदा, चतुष्पदा व पञ्चपदा हो सकता है।

क्रम	भेद-प्रभेद	पाद	अक्षर	टिप्पणी
१	गायत्री	३	८+८+८ (=२४)	तीनों पादों में अक्षर समान रूप से होते हैं।
२	निचृत्	३	२३	निचृद्गायत्री
३	विराट्	३	२२	विराड्गायत्री
४	भुरिक्	३	८+१०+७ (=२५)	भुरिग्गायत्री
५	स्वराट्	३	२६	स्वराड्गायत्री
६	पादनिचृत्	३	७+७+७ (=२१)	प्रत्येक पाद के निचृत् होने से पादनिचृत् विशेषण लगाया जाता है।
७	अतिपादनिचृत्	३	६+८+७ (=२१)	
८	अतिनिचृत्	३	७+६+७ (=२०)	
९	हृसीयसी (अतिनिचृत्)	३	६+६+७ (=१९)	ऋक्प्रातिशाख्य में इसे अतिनिचृत् नाम से की स्मरण किया है।
१०	वर्धमाना	३	६+७+८ (=२१)	ऋक्प्रातिशाख्य में ८+६+८ (=२२) को भी वर्धमाना कहा गया है।
११	प्रतिष्ठा	३	८+७+६ (=२१)	वर्धमाना के विपरीत
१२	वाराही	३	६+९+९ (=२४)	
१३	नागी	३	९+९+६ (=२४)	वाराही के विपरीत
१४	यवमध्या	३	७+१०+७ (=२४)	आदि और अन्त दोनों पादों की अक्षर संख्या अल्प हो।
१५	पिपीलिकमध्या	३	९+६+९ (=२४)	आदि और अन्त दोनों पादों की अक्षर संख्या अधिक हो।
१६	उष्णिग्गर्भा	३	६+७+११ (=२४)	
१७	त्रिपाद् विराट्	३	११+११+११ (=३३)	महर्षि दयानन्द इसको अनुष्टुप छन्द का भेद मानते हैं।
१८	चतुष्पाद	४	६+६+६+६ (=२४)	
१९	पदपंक्ति	५	५+५+५+५+५ (=२५) अथवा ३x५+४+६ (=२५)	इसमें चार अक्षर का पाद कहीं भी हो सकता है।
२०	भुरिक् पदपंक्ति	५	४x५+६ (=२६)	
२१	द्विपदा	२	१२+१२ (=२४) अथवा ८+८ (=१६)	
२२	द्विपाद् विराट्	२	१२+८ (=२०) अथवा १०+१० (=२०)	
२३	द्विपाद् स्वराट्	२	९+९ (=१८)	

क्रम	भेद-प्रभेद	पाद	अक्षर	टिप्पणी
२४	एकपदा	१	८	

उष्णिक् छन्द के भेद-प्रभेद

उष्णिक् छन्द के प्रायः तीन पाद व २८ अक्षर होते हैं।

क्रम	भेद-प्रभेद	पाद	अक्षर	टिप्पणी
१	उष्णिक्	३	८+८+१२ (=२८)	इसको परोष्णिक् के नाम से भी जानते हैं।
२	ककुप्	३	८+१२+८ (=२८)	ककुबुष्णिक्
३	पुर	३	१२+८+८ (=२८)	पुरउष्णिक्
४	ककुम्भ्यङ्कुशिरा	३	११+१२+४ (=२७)	ऋक्प्रातिशाख्य में इसको निचृत् विशेषण दिया गया है।
५	तनुशिरा	३	११+११+६ (=२८)	
६	पिपीलिकामध्या	३	११+६+११ (=२८)	
७	चतुष्पाद्	४	७+७+७+७ (=२८)	

अनुष्टुप् छन्द के भेद-प्रभेद

अनुष्टुप् छन्द के प्रायः चार पाद व ३२ अक्षर होते हैं।

क्रम	भेद-प्रभेद	पाद	अक्षर	टिप्पणी
१	पुरस्ताज्ज्योति	३	८+१२+१२ (=३२)	पिङ्गलसूत्र में इसे त्रिपाद् के नाम से स्मरण किया गया है।
२	मध्येज्योतिः	३	१२+८+१२ (=३२)	इसको पिपीलिकमध्या भी कहा है। पिङ्गलसूत्र में इसे त्रिपाद् के नाम से स्मरण किया गया है।
३	उपरिष्ठाज्ज्योति	३	१२+१२+८ (=३२)	इसको कृति भी कहा है। पिङ्गलसूत्र में इसे त्रिपाद् के नाम से स्मरण किया गया है।
४	काविराट्	३	९+१२+९ (=३०)	
५	नष्टरूपा	३	९+१०+१३ (=३२)	पादों में विषम संख्या होने से अनुष्टुप् रूप नष्ट हो गया।
६	विराट्	३	१०+१०+१० (=३०)	अथवा ११+११+११ (=३३)। विराडनुष्टुप्
७	अनुष्टुप्	४	८+८+८+८ (=३२)	चतुष्पाद्

क्रम	भेद-प्रभेद	पाद	अक्षर	टिप्पणी
८	पादैर्	४	७+७+७+७ (=२८)	पाद संख्या से अनुष्टुप् अक्षर संख्या से उष्णिक्
९	महापदपङ्क्ति	६	५+५+५+५+५+६ (=३१)	यह भेद सर्वमान्य नहीं है।

बृहती छन्द के भेद-प्रभेद

बृहती छन्द के प्रायः चार पाद व ३६ अक्षर होते हैं।

क्रम	भेद-प्रभेद	पाद	अक्षर	टिप्पणी
१	बृहती	४	९+९+९+९ (=३६)	अथवा १०+१०+८+८ (=३६)
२	पुरस्ताद्	४	१२+८+८+८ (=३६)	
३	उरो	४	८+१२+८+८ (=३६)	स्कन्धोग्रीवी, न्यङ्कुसारिणी नामों से भी जाना जाता है।
४	पथ्या	४	८+८+१२+८ (=३६)	सिद्धा, स्कन्धोग्रीवी नामों से भी जाना जाता है।
५	उपरिष्ठाद्	४	८+८+८+१२ (=३६)	
६	विष्टार	४	८+१०+१०+८ (=३६)	
७	विषमपदा	४	९+८+११+८ (=३६)	
८	महा	३	१२+१२+१२ (=३६)	सतो, ऊर्ध्व, विराडूर्ध्व, त्रिपदा नामों से भी जाना जाता है।

पङ्क्ति छन्द के भेद-प्रभेद

पङ्क्ति छन्द के प्रायः चार पाद व ४० अक्षर होते हैं।

क्रम	भेद-प्रभेद	पाद	अक्षर	टिप्पणी
१	सतः	४	१२+८+१२+८ (=४०)	सतो, बृहती, सिद्धा, विष्टार, सिद्धाविष्टार नामों से भी जाना जाता है।
२	सतः	४	८+१२+८+१२ (=४०)	विपरीता, सिद्धा, विष्टार नामों से भी जाना जाता है।
३	आस्तार	४	८+८+१२+१२ (=४०)	
४	प्रस्तार	४	१२+१२+८+८ (=४०)	
५	संस्तार	४	१२+८+८+१२ (=४०)	
६	विष्टार	४	८+१२+१२+८ (=४०)	

क्रम	भेद-प्रभेद	पाद	अक्षर	टिप्पणी
७	आर्षी	४	१२+१२+१०+१० (=४४)	यह सर्वमान्य नहीं है।
८	विराट्	४	१०+१०+१०+१० (=४०)	
९	पथ्या	५	८+८+८+८+८ (=४०)	
१०	पद	५	५x५ (=२५)	अथवा ४+३x५+६ (=२५)
११	अक्षर	४	५+५+५+५ (=२०)	चतुष्पदा अक्षर भी कहा जाता है
१२	अक्षर	२	५+५ (=१०)	द्विपदा अक्षर भी कहा जाता है
१३	द्विपदा	२	१२+८ (=२०)	विराट्, द्विपदाविष्टार भी कहा जाता है
१४	जगती	६	८+८+८+८+८+८ (=४८)	विस्तार, विष्टार भी कहा जाता है

त्रिष्टुप् छन्द के भेद-प्रभेद

त्रिष्टुप् छन्द के प्रायः चार पाद व ४४ अक्षर होते हैं।

क्रम	भेद-प्रभेद	पाद	अक्षर	टिप्पणी
१	त्रिष्टुप्	४	११+११+११+११ (=४४)	
२	जगती	४	१२+१२+११+११ (=४६)	अक्षर संख्या किसी भी क्रम में हो सकती है।
३	अभिसारिणी	४	१०+१०+१२+१२ (=४४)	
४	विराट्स्थाना	४	९+९+१०+११ (=३९)	अथवा २x१०+९+११ (=४०) जिसमें पादों का क्रम भिन्न हो सकता है। अथवा ९+१०+२x११ (=४१)
५	विराड् रूपा	४	३x११+८ (=४१)	
६	पुरस्ताज्ज्योतिः	४	८+१२+१२+१२ (=४४)	अथवा ८+११+११+११ (=४१) या ११+८+८+८+८ (=४३)
७	मध्येज्योतिः	४	१२+८+१२+१२ (=४४)	अथवा १२+१२+८+१२ (=४४) या ११+८+११+११ (=४१) या ११+११+८+११ (=४१) या ८+८+११+८+८ (=४३)

क्रम	भेद-प्रभेद	पाद	अक्षर	टिप्पणी
८	उपरिष्ठाज्ज्योतिः	४	१२+१२+१२+८ (=४४)	अथवा ११+११+११+८ (=४१) या ८+८+८+८+११ (=४३)
९	महाबृहती	५	१२+८+८+८+८ = (=४४)	पञ्चपदा भी कहा जाता है। पिङ्गल ने इसको पुरस्ताज्ज्योतिर्जगती कहा है।
१०	यवमध्या	५	८+८+१२+८+८ (=४४)	पिङ्गल ने इसको मध्येज्योतिर्जगती कहा है।
११	पङ्क्त्युत्तरा	५	१०+१०+८+८+८ (=४४)	विराट्पूर्वा भी कहा जाता है।
१२	द्विपदा	२	११+११ (=२२)	
१३	एकपदा	१	११ (=११)	

जगती छन्द के भेद-प्रभेद

जगती छन्द के प्रायः चार पाद व ४८ अक्षर होते हैं।

क्रम	भेद-प्रभेद	पाद	अक्षर	टिप्पणी
१	जगती	४	१२+१२+१२+१२ (=४८)	
२	उप	४	१२+१२+११+११ (=४६)	कोई भी दो पाद ११ अक्षर के और कोई दो १२ अक्षर के हो सकते हैं।
३	पुरस्ताज्ज्योतिः	४	८+१२+१२+१२ (=४४)	अथवा ५ पाद १२+८+८+८+८ (=४४)
४	मध्येज्योतिः	४	१२+८+१२+१२ (=४४)	अथवा १२+१२+८+१२ (=४४) या ५ पाद ८+८+१२+८+८ (=४४)
५	उपरिष्ठाज्ज्योतिः	४	१२+१२+१२+८ (=४४)	अथवा ५ पाद ८+८+८+८+१२ (=४४)
६	महासतो	५	३x८+२x१२ (=४८)	पिङ्गल ने इसका निर्देश नहीं किया। पाद किसी भी क्रम में हो सकते हैं। पञ्चपदा नाम से भी जाना जाता है।
७	षट्पदा	६	६x८ (=४८)	महापङ्क्ति नाम से भी जाना जाता है।
८	महापङ्क्ति	६	८+८+७+६+१०+९ (=४८)	
९	विष्टारपङ्क्ति	८	८x६ (=४८)	प्रवृद्धपदा भी कहा जाता है।

क्रम	भेद-प्रभेद	पाद	अक्षर	टिप्पणी
१०	द्विपदा	२	२x१२ (=२४)	
११	एकपदा	१	१२ (=१२)	
१२	ज्योतिष्मती			निदानसूत्र में निर्देश है कि इसके अन्तिम पाद में ८ अक्षर होते हैं, बाकी ४० कैसे भी हो सकते हैं।

बाकि बचे द्वितीय और तृतीय सप्तकों के १४ छन्दों के भेदों के प्रमाण शास्त्रों में उपलब्ध नहीं हैं। इनका केवल एक ही भेद दिया जा रहा है।

क्रम	छन्द	पाद	अक्षर	टिप्पणी
१३	अतिजगती	५	१२+१२+१२+८+८ (=५२)	
१४	शक्वरी	७	७x८ (=५६)	
१५	अतिशक्वरी	५	१६+१६+१२+८+८ (=६०)	
१६	अष्टि	५	१६+१६+१६+८+८ (=६४)	अथवा ८x८ (=६४) या ४x१६ (=६४)
१७	अत्यष्टि	७	१२+१२+८+८+८+१२+८ (=६८)	
१८	धृति	७	१२+१२+८+८+८+१६+८ (=७२)	
१९	अतिधृति	८	१२+१२+८+८+८+१२+८+८ (=७६)	
२०	कृति		(=८०)	
२१	प्रकृति		(=८४)	
२२	आकृति		(=८८)	
२३	विकृति	११	१०x८+१२ (=९२)	
२४	संकृति		(=९६)	
२५	अभिकृति		(=१००)	
२६	उत्कृति		(=१०४)	